• ऊर्जा...

लकड़ी का मंदिर

लकड़ी में नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने और सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करने की क्षमता होती है। लकड़ी का मंदिर घर में ऊर्जा संतुलन बनाए रखने में मदद करता है, जिससे मन शांत रहता है और तनाव कम होता है। घर में लकड़ी का मंदिर धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण है। यह सकारात्मक ऊर्जा, शांति, समृद्धि और सुख-शांति लाता है. यह देवी-देवताओं का वासस्थान होता है और धार्मिक अनुष्ठान करने का एक उपयुक्त स्थान होता है। लकड़ी को प्रकृति का प्रतीक माना जाता है, जो पवित्रता और सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत है। ये मन को शांत करता है और आध्यात्मिकता को बढ़ावा देता है। हिंदू धर्म में, लकड़ी को देवी-देवताओं का प्रिय निवास माना जाता है।

▶ **लकड़ी का मंदिर रखने की सही दिशा**- पूर्व और उत्तर दिशाएं मंदिर स्थापित करने के लिए सबसे शुभ मानी जाती हैं। पूर्व दिशा सूर्योदय की दिशा होने के कारण यह दिशा सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर होती है। यह ईश्वर और आध्यात्मिकता का प्रतीक भी है।

▶ उत्तर दिशा समृद्धि और बुद्धि का प्रतीक है। स्थापित मंदिर ज्ञान

और सफलता प्राप्ति में सहायक होता है।

▶ दक्षिण और पश्चिम दिशा को अशुभ माना जाता है। यह दिशा अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करती है। मंदिर स्थापित करने से नकारात्मक ऊर्जा और वादा-विवाद बढ़ सकता है।।

▶ पश्चिम दिशा सूर्यास्त की दिशा है। इस दिशा में मंदिर रखने से धन हानि और अनिश्चितता की आशंका रहती है।

▶ **मंदिर कितनी ऊंचाई पर रखें**- मंदिर की ऊंचाई आपकी नाभि से कम होनी चाहिए। मंदिर का फर्श जमीन से थोड़ा ऊँचा होना चाहिए। मंदिर को सदैव स्वच्छ और व्यवस्थित रखना चाहिए। दीपक जलाना चाहिए। धूप और अगरबत्ती जलाना चाहिए। फूल और फल रखना चाहिए। भगवान की मूर्तियां स्थापित करनी चाहिए। मंदिर के सामने खाली जगह होनी चाहिए ताकि आप आराम से पूजा कर सकें।

▶ **मंदिर की लकड़ी का प्रकार**- शीशम और सागौन की लकड़ी सबसे शुभ मानी जाती है. आप अपनी पसंद और बजट के अनुसार अन्य प्रकार की लकड़ी भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

• जन्म दिवस...

परशुराम जयंती

परशुराम जयंती हिंदू कैलेंडर के अनुसार वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाई जाती है। यह भगवान विष्णु के छठे अवतार परशुराम के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है। 2024 में, परशुराम

जयंती 10 मई को मनाई जाएगी। परशुराम जयंती का महत्व कई कारणों से है। यह भगवान परशुराम के जन्म का उत्सव है, जिन्हें भगवान विष्णु के छठे अवतार के रूप में जाना जाता है। परशुराम को एक महान योद्धा और ब्राह्मण के रूप में जाना जाता है। उन्होंने पृथ्वी को क्षत्रियों से मुक्त करने के लिए 21 बार पृथ्वी पर अवतार लिया। परशुराम जयंती को बुराई पर अच्छाई की जीत के उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है।

2024 में परशुराम जयंती का शुभ मुहूर्त

स्नान का मुहूर्त-सुबह 5:23 बजे से 6:22 बजे तक

पूजा का मुहूर्त-सुबह 8:16 बजे से 9:31 बजे तक

अपराह्न का मुहूर्त-दोपहर 12:12 बजे से 1:07 बजे तक

पूजा विधि- सुबह-सूर्योदय से पहले उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र पहनें। भगवान परशुराम की पूजा करने का संकल्प लें। पूजा स्थल पर एक दीपक जलाएं और पूजा स्थल पर आसन बिछाकर बैठ जाएं। पूजा की शुरुआत भगवान गणेश की पूजा से करें। एक कलश स्थापित करें और उसमें जल भरें। नारियल, मौली, रोली, चंदन और सुपारी से कलश को सजाएं। भगवान परशुराम का चित्र या प्रतिमा स्थापित करें। पवित्र जल से आचमन करें।

भगवान परशुराम को पवित्र जल, दूध, घी, शहद और फूलों से स्नान कराएं और इसते बाद उन्हें वस्त्र, आभूषण, अक्षत, पुष्प, धूपदीप और नैवेद्य अर्पित करें। भगवान परशुराम की आरती उतारकर अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना करें। ब्राह्मणों को भोजन कराएं और दक्षिणा दें।

दोपहर-इस दिन दोपहर के समय भगवान परशुराम की कथा का पाठ करना या सुनना लाभकारी होता है। इसके अलावा आप इस दिन दान-पुण्य करें।

शाम-भगवान परशुराम की आरती उतारें और प्रसाद ग्रहण करें।

कहां मनायी जाती है परशुराम जयंती-परशुराम जयंती को पूरे भारत में बड़े उत्साह और भक्ति के साथ मनाया जाता है। इस दिन लोग सुबह जल्दी उठकर स्नान करते हैं और भगवान परशुराम की पूजा करते हैं। मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन किया जाता है। लोग भगवान परशुराम को फूल, फल और मिठाई चढ़ाते हैं। इस दिन लोग गरीबों और जरूरतमंदों को दान भी देते हैं।

महाराष्ट्र-महाराष्ट्र में परशुराम जयंती को बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। पालघर जिले के त्र्यंबकेश्वर में स्थित त्र्यंबकेश्वर मंदिर इस दिन का मुख्य केंद्र होता है।

गुजरात-गुजरात में भी परशुराम जयंती बड़े पैमाने पर मनाई जाती है। राज्य के कई शहरों में भगवान परशुराम की शोभायात्रा निकाली जाती है।

हिमाचल प्रदेश में भी परशुराम जयंती धूमधाम से मनाई जाती है। राज्य के कई मंदिरों में इस दिन विशेष पूजा-अर्चना का आयोजन किया जाता है।

अक्षय तृतीया

इस वर्ष अक्षय तृतीया का पर्व शुक्रवार, 10 मई को मनाया जाएगा। वैदिक पंचांग के अनुसार वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि की शुरुआत 10 मई को सुबह 4 बजकर 17 मिनट पर होगी।

वहीं इस तृतीया तिथि का समापन 11 मई 2024 को सुबह 02 बजकर 50 मिनट पर होगी। उदया तिथि के आधार पर 10 मई को अक्षय तृतीया का पर्व मनाया जाएगा....

हिंदू धर्म में अक्षय तृतीया के पर्व का विशेष महत्व होता है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार यह तिथि बहुत ही शुभ और महत्वपूर्ण मानी गई है। वैदिक पंचांग के अनुसार अक्षय तृतीया का पर्व हर वर्ष वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है। अक्षय का अर्थ होता है, जिसका कभी क्षय न हो या फिर जिसका कभी नाश न हो। इस तिथि को अबूझ मुहूर्त माना गया है, यानी इस तिथि पर किसी भी शुभ कार्य और मांगलिक कार्य को करने के लिए मुहूर्त का विचार नहीं करना पड़ता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस शुभ पर्व पर किया जाने वाले दान-पुण्य, पूजा-पाठ, जाप-तप और शुभ कर्म करने पर मिलने वाला फलों में कमी नहीं होती है। इस दिन सोने के गहने खरीदने और मां लक्ष्मी की पूजा करने का विशेष महत्व होता है। इस वर्ष अक्षय तृतीया का पावन त्योहार 10 मई को है, ऐसे में आइए जानते हैं इस पर्व के महत्व और तिथि के बारे में सबकुछ।

इस वर्ष अक्षय तृतीया का पर्व शुक्रवार, 10 मई को मनाया जाएगा। वैदिक पंचांग के अनुसार वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि की शुरुआत 10 मई को सुबह 4 बजकर 17 मिनट पर होगी। वहीं इस तृतीया तिथि का समापन 11 मई 2024 को सुबह 02 बजकर 50 मिनट पर होगी। उदया तिथि के आधार पर 10 मई को अक्षय तृतीया का पर्व मनाया जाएगा। अक्षय तृतीया त्योहार पर मां लक्ष्मी और भगवान विष्णु की पूजा के लिए शुभ मुहूर्त सुबह 5 बजकर 48 मिनट से लेकर दोपहर 12 बजकर 23 मिनट तक रहेगा।

● **अक्षय तृतीया का महत्व**-अक्षय तृतीया के पर्व को आखा तीज के नाम से भी जाना है। इस दिन को परशुराम जयंती के रूप में भी मनाई जाती है। यह पर्व हिंदू और जैन दोनों ही धर्म के भक्तों के लिए विशेष होता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार अक्षय तृतीया तिथि पर ही त्रेता और सतयुग का आरंभ भी हुआ था, इसलिए इसे कृतयुगादि तृतीया भी कहते हैं। अक्षय तृतीया तिथि की अधिष्ठात्री देवी पार्वती हैं। इस पर्व पर स्नान, दान, जप, यज्ञ, स्वाध्याय और तर्पण आदि जो भी कर्म किए जाते हैं वे सब अक्षय हो जाते हैं। यह तिथि सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली और सभी सुखों को प्रदान करने वाली मानी गई है। शुभ कार्यों को संपन्न करने के लिए अक्षय तृतीया की तिथि बहुत ही खास मानी गई है। इस दिन नई योजना को शुरू करने, नए व्यवसाय, नौकरी, नए घर में प्रवेश करने और शुभ खरीदारी के लिए बहुत ही शुभ माना गया है।

● **स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त है अक्षय तृतीया**-शास्त्रों में अक्षय तृतीया तिथि को स्वयं सिद्ध अबूझ मुहूर्त माना गया है। यानी इस तिथि पर बिना मुहूर्त का विचार किए सभी प्रकार के शुभ कार्य संपन्न किया जा सकता है। इस दिन कोई भी शुभ मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह प्रवेश, सोने-चांदी के आभूषण, घर, भूखंड या वाहन आदि की खरीदारी से सम्बंधित कार्य किए जा सकते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस अबूझ मुहूर्त की तिथि पर व्यापार आरम्भ, गृह प्रवेश, वैवाहिक कार्य, सकाम अनुष्ठान, दान-पुण्य,पूजा-पाठ अक्षय रहता है अर्थात वह कभी नष्ट नहीं होता।

● **अक्षय तृतीया का ज्योतिषीय महत्व**-हिंदू पंचांग के अनुसार हर वर्ष अक्षय तृतीया का त्योहार वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है। वैदिक ज्योतिष शास्त्र में भी इस तिथि का विशेष महत्व होता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जब अक्षय तृतीया का पर्व आता है तब सूर्य अपनी उच्च राशि मेष में रहते हैं, साथ ही इस तिथि पर चंद्रमा वृषभ राशि में मौजूद होते हैं। माना जाता है इस दौरान सूर्य और चंद्रमा दोनों ही सबसे ज्यादा चमकीले यानी सबसे ज्यादा प्रकाश उत्सर्जित करते हैं। इस तरह से अक्षय तृतीया पर ज्यादा से ज्यादा प्रकाश पृथ्वी की सतह पर मौजूद रहता है। इस कारण से इस अवधि को सबसे शुभ समय माना जाता है।

● अक्षय तृतीया तिथि पर भगवान विष्णु के छठे अवतार भगवान श्री परशुराम जी की जयंती भी मनाई जाती है। भगवान परशुराम को चिरंजीवी माना गया है इस कारण से इस चिरंजीवी तिथि भी कहा जाता है।

● अक्षय तृतीया पर ही सतयुग और त्रेतायुग का प्रारंभ हुआ था।

● भगवान विष्णु के अवतार नर-नारायण और हयग्रीव का अवतरण अक्षय तृतीया तिथि पर ही हुआ था।

● इस तिथि पर ही ब्रह्माजी के पुत्र अक्षय कुमार का आविर्भाव हुआ था।

● अक्षय तृतीया के दिन ही वेद व्यास और श्रीगणेश द्वारा महाभारत ग्रंथ के लेखन का प्रारंभ किया गया था।

● अक्षय तृतीया के पर्व के दिन ही महाभारत के युद्ध का समापन हुआ।

● धार्मिक मान्यताओं के अनुसार अक्षय तृतीया की तिथि पर ही मां गंगा का पृथ्वी में आगमन हुआ था।

● इस तिथि पर ही हर वर्ष श्री बद्रीनाथ के कपाट खोले जाते हैं ।

● अक्षय तृतीया तिथि पर ही वृन्दावन के श्री बांकेबिहारी जी के मंदिर में सम्पूर्ण वर्ष में केवल एक बार श्री विग्रह के चरणों के दर्शन होते हैं।

● अक्षय तृतीया तिथि से ही उड़ीसा के प्रसिद्धि पुरी रथ यात्रा के लिए रथों के निर्माण का कार्य शुरू हो जाता है।

■ पं. कुदीप शास्त्री

• अशुभता...

पौछा लगाना

पुराने कपड़े अशुभता का प्रतीक माने जाते हैं। पौछा लगाना एक नकारात्मक कार्य माना जाता है, जो नकारात्मक ऊर्जा ला सकता है। पुराने कपड़ों का पौछा दोनों नकारात्मक चीजों का मिश्रण है, इसलिए यह माना जाता है कि यह दुर्भाग्य ला सकता है। हमारे विचार और विश्वास हमारे जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं। अगर आप मानते हैं कि पुराने कपड़ों का पौछा लगाने से दुर्भाग्य आता है, तो यह आपके जीवन में नकारात्मकता ला सकता है। कुछ ज्योतिषियों का मानना है कि पुराने कपड़े नकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित कर सकते हैं। यदि आप इन कपड़ों का उपयोग पौछा लगाने के लिए करते हैं, तो यह नकारात्मक ऊर्जा आपके घर में प्रवेश कर सकती है, जिससे नकारात्मक प्रभाव पड़ सकते हैं। लेकिन, यह केवल एक मान्यता है, और इसका समर्थन करने के लिए कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

• आत्मविश्वास...

चाणक्य का मानना था कि आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है। उन्होंने कहा, सफलता का सबसे बड़ा रहस्य आत्मविश्वास है। यदि आप खुद पर विश्वास करते हैं, तो आप कुछ भी हासिल कर सकते हैं। अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखें। नकारात्मक विचारों को अपने दिमाग में न आने दें। सकारात्मक रहें और खुद पर विश्वास रखें।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित